विचार बिन्दु

सुंदर विचार जिनके साथ हैं। वे कभी एकांत में नहीं हैं। –सर पी. सिडनी

बदलते भारत में टेक्नोलॉजी, नैतिकता और न्याय

आज भारत एक दिलचस्प मोड़ पर खड़ा है। हम हज़ारों साल पुरानी सभ्यता हैं, फिर भी आबादी के लिहाज़ से दुनिया के सबसे युवा देशों में से एक हैं। हम धर्म और न्याय केपुरातन दर्शनों का घर हैं, फिर भी हम ऐसा आधुनिक सार्वजनिक डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर बना रहे हैं जिन्हें दुनिया तारीफ़ से देखती है। मगर परंपरा और बदलाव के बीच का यह मेल एक अहम सवाल खड़ा करता है कि जैसे-जैसे भारत टेक्नोलॉजी के ज़रिए बदल रहा है, क्या हम न्याय के करीब जा रहे हैं या उससे दूर होते जा रहे हैं? इसका जवाब देने के लिए, हमें तीन आपस में गहरी जुड़ी चीजों को समझना होगा। वे हैं नैतिकता, टेक्नोलॉजी और न्याय। इन्हीं तीन चीजों को समाहित करते हुए जयपुर में पिछले दिनों 'सूरज संस्थान' ने 'कनोडिया स्कूल ऑफ लॉ फॉर वीमन' के साथ मिल कर एक अंतर्राष्ट्रीय गोष्ठी रखी। यह स्पष्ट है कि टेक्नोलॉजी बदलाव का इंजन होती है और वह बदलाव लाने वाली सबसे साफ़ दिखने वाली ताकत होती है। पिछले एक दशक में यूपीआई भुगतान से लेकर आधार-आधारित पहचान प्रणालियों तक, व एआई-पावर्ड गवर्नेंस टूल्स से लेकर ऑनलाइन शिक्षा प्लेटफॉर्म तक, टेक्नोलॉजी ने हमारे जीने, काम करने और एक-दूसरे से जुड़ने के तरीके को पूरी तरह बदल दिया है। किसी भी शहर में अब एक सब्ज़ी बेचने वाला, गोलगप्पे खिलाने वाला और रिक्शेवाला भी डिजिटल पेमेंट ले सकता है। किसी दूर-दराज के गांव का एक छात्र ऑनलाइन क्लास में शामिल हो सकता है। कोई मरीज़ टेलीमेडिसिन के ज़रिए सैकड़ों किलोमीटर दूर बैठे डॉक्टर से सलाह ले सकता है। इस नई टेक्नोलॉजी में सभी तक पहुंच को आसान बनाने, काम में होने वाली कमियों को दूर करने और दूरियों को पाटने की ताकत है। लेकिन यहीं पर एक एक पेंच भी है। टेक्नोलॉजी अपने आप में नैतिक नहीं होती। यह तटस्थ होती है। उसका असर इस बात पर निर्भर करता है कि हम इसे कैसे डिज़ाइन करते हैं, कैसे लागू करते हैं, और कैसे इसे नियंत्रित करते हैं। नैतिकता वह दिशासूचक होती है जिसे हम नज़रअंदाज़ नहीं कर सकते। भारत की सनातन नैतिक परंपरा बहुत समृद्ध है। अहिंसा, धर्म (कर्तव्य) और सर्वोदय (सभी का कल्याण) जैसे विचार हमें सिखाते हैं कि तरक्की तभी सार्थक होती है जब वह सभी का भला करे। लेकिन डिजिटल युग में, नैतिकता से जुड़े सवाल और भी ज़्यादा पेचीदा होते जा रहे हैं। जैसे कि क्या कंपनियों को लोगों का बहुत सारा निजी डेटा इकट्ठा करके अपने पास रखना चाहिए? क्या एल्गोरिदम ऐसे फ़ैसले ले सकते हैं जिनका असर लोगों की ज़िंदगी पर पड़े, क्या एआई से लोन मंज़ूर करना या नौकरी के लिए लोगों को चुनना उचित है? एक आसान सा उदाहरण लेते हैं। सुरक्षा के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला फ़ेशियल रिकग्निशन सिस्टम। यह सुरक्षा को बेहतर बना सकता है, लेकिन अगर यह किसी की पहचान गलत कर दे तो क्या होगा? अगर यह कुछ खास समुदायों को ही ज़्यादा निशाना बनाए तो क्या होगा? जब एआई सिस्टम से कोई गलती हो जाती है, तो उसके लिए ज़िम्मेदार कौन होगा? नैतिक निगरानी के अभाव में, तकनीक अनजाने में ही पूर्वाग्रहों को मज़बूत कर सकती है, असमानताओं को गहरा कर सकती है, और यहां तक कि मौलिक अधिकारों को भी नज़रंदाज़ कर सकती है। इसलिए, नैतिकता कोई विलासिता नहीं, बल्कि एक आवश्यकता है।

इस विमर्श के केंद्र में अंतिम लक्ष्य न्याय होना चाहिए। न्याय का मतलब सिर्फ़ अदालतें और कानून नहीं होते है। न्याय का मतलब है निष्पक्षता, समानता और गरिमा। इसका मतलब है यह सुनिश्चित करना कि हर नागरिक, चाहे उसकी पृष्ठभूमि कुछ भी हो, को अवसरों और अधिकारों तक समान पहुंच मिले। प्रौद्योगिकी में न्याय को शक्तिशाली तरीकों से आगे बढ़ाने की क्षमता होती है, जैसे सार्वजनिक सेवाओं तक पहुंच। डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म दूरदराज के इलाकों तक सरकारी सेवाएं पहुंचा सकते हैं; स्कूलों की कक्षाएं भी पहुंचा सकते हैं। ऑनलाइन सिस्टम मानवीय विवेक के दखल को कम करके भ्रष्टाचार कम कर सकते हैं। वह समावेशन में मदद कर सकते हैं। वित्तीय प्रौद्योगिकियां लाखों लोगों को औपचारिक अर्थव्यवस्था में शामिल कर सकती हैं। फिर भी प्रौद्योगिकी अन्याय के नए रूप भी पैदा कर सकती है। डिजिटल विभाजन उन लोगों को बाहर कर देता है जिनके पास इंटरनेट की पहुंच या डिजिटल साक्षरता नहीं है। इसके अलावा एल्गोरिद्मिक पूर्वाग्रह से हाशिए पर पड़े समूहों के साथ भेदभाव हो सकता है। निगरानी प्रौद्योगिकियां निजता और स्वतंत्रता के लिए खतरा बन सकती हैं। सवाल यह नहीं है कि क्या प्रौद्योगिकी न्याय की ओर ले जाती है, बल्कि सवाल यह है कि हम यह कैसे सुनिश्चित करें कि वह न्याय की तरफ ले जाए। भारतीय संदर्भ में देखें तो हमें नई प्रौद्योगिकियां अवसर और चुनौतियां दोनों देती हैं। भारत में हो रहा परिवर्तन अपने पैमाने और विविधता के कारण अद्वितीय है। हम लाखों लोगों की बात नहीं कर रहे हैं, हम अरबों लोगों की बात कर रहे हैं। यहां किसी भी तकनीकी समाधान को भाषाओं, संस्कृतियों और आर्थिक स्थितियों के पार जाकर काम करना होगा, जो अवसर और चुनौतियां दोनों पैदा करता है। भारत समावेशी नवाचार का नेतृत्व कर सकता है। ऐसे समाधान दे सकता है जो सबसे वंचित लोगों के लिए डिज़ाइन किए गए हों। हमारा डिजिटल सार्वजनिक बुनियादी ढांचा न्यायसंगत विकास के लिए एक वैश्विक मॉडल बन सकता है। हम नैतिक सिद्धांतों को प्रौद्योगिकी में शुरू से ही एकीकृत कर सकते हैं। लेकिन इसमें बड़ी चुनौतियां हैं। हमें शहरी-ग्रामीण डिजिटल विभाजन को पाटना होगा; तेजी से डिजिटलीकृत हो रहे समाज में डेटा निजता और सुरक्षा सुनिश्चित करना होगा; गलत सूचना या सामाजिक विभाजन के लिए प्रौद्योगिकी के दुरुपयोग को रोकना होगा। नैतिकता और वास्तविकता जहां मिलती हैं कुछ उस वास्तविक दुनिया के परिदृश्यों पर नज़र डालें। भारत के डिजिटल भुगतान पारिस्थितिकी तंत्र ने लेन-देन को तेज़ और अधिक सुलभ बना दिया है। लेकिन यह डेटा निजता और वित्तीय सुरक्षा के बारे में भी सवाल उठाता है। क्या उपयोगकर्ताओं को पता होता है कि उनके डेटा का उपयोग कैसे किया जाता है? नौकरी के आवेदनों की छंटनी के लिए एआई उपकरणों का उपयोग तेजी से बढ़ रहा है। हालांकि ये कुशल हैं, लेकिन अगर इन्हें पक्षपातपूर्ण डेटा पर प्रशिक्षित किया जाता है, तो ये मौजूदा पूर्वाग्रहों को दोहरा सकते हैं। सोशल मीडिया लोगों को जोड़ने वाले प्लेटफ़ॉर्म के रूप में महत्वपूर्ण है, किन्तु वह गलत सूचना को भी तेज़ी से फैला सकते हैं, जिससे चुनाव, सार्वजनिक स्वास्थ्य और सामाजिक सद्भाव प्रभावित हो सकते हैं। इनमें से प्रत्येक के उदाहरण दिखाते हैं कि नैतिकता के बिना प्रौद्योगिकी न्याय को कमजोर भी कर सकती है।

नैतिकता वह दिशासूचक होती है जिसे हम नज़रअंदाज़ नहीं कर सकते। भारत की सनातन नैतिक परंपरा बहुत समृद्ध है। अहिंसा, धर्म (कर्तव्य) और सर्वोदय (सभी का कल्याण) जैसे विचार हमें सिखाते हैं कि तरक्की तभी सार्थक होती है जब वह सभी का भला करे। लेकिन डिजिटल युग में, नैतिकता से जुड़े सवाल और भी ज़्यादा पेचीदा होते जा रहे हैं।

ऐसे में हम आगे कैसे बढ़ें? इसका जवाब लोगों को जोड़ने वाले तरीके में है। इसके लिये ज़िम्मेदार शासनव सरकारों को ऐसी नीतियां बनानी होगी जो नए आइडिया और नियमों के बीच संतुलन बनाए रखें। डेटा सुरक्षा, एआई नैतिकता और डिजिटल अधिकारों पर कानून बहुत ज़रूरी हैं। नैतिक डिज़ाइन का मामला सबसे महत्वपूर्ण है। इंजीनियरों और डेवलपर्स को टेक्नोलॉजी में शुरू से ही नैतिक सवालों को शामिल करना होगा। इसके अलावा लोगों में जागरूकता की सबसे बड़ी जरूरत है। नागरिकों को जानकारी और ताकत मिलनी चाहिए। आज की दुनिया में डिजिटल साक्षरता उतनी ही ज़रूरी है जितनी पारंपरिक साक्षरता। कंपनियों की भी जवाबदेही बनानी होगी। कंपनियों को केवल अपना मुनाफा बढ़ाने से आगे बढ़कर अपने सामाजिक सरोकारों के बारे में भी सोचना होगा। पारदर्शिता और जवाबदेही पर कोई समझौता नहीं होना चाहिए। टेक्नोलॉजी सभी के लिए बनाई जानी चाहिए, सिर्फ़ कुछ खास लोगों के लिए नहीं। इसका मतलब है कि इसे सभी के लिए सुलभ, किफ़ायती और इस्तेमाल में आसान बनाने पर ध्यान देना होगा। भारत का पुराना ज्ञान एक गहरी समझ देता है: यथा दृष्टि, तथा सृष्टि अर्थात जैसी सोच, वैसी ही दुनिया। अगर टेक्नोलॉजी के बारे में हमारी सोच सिर्फ़ काम करने की तेज़ी और मुनाफ़े पर टिकी है, तो हम शायद एक ऐसी दुनिया बना लेंगे जो तेज़ तो होगी, लेकिन उसमें सबके साथ बराबरी का बर्ताव नहीं होगा। लेकिन अगर हमारी सोच नैतिकता और न्याय से जुड़ी होगी, तो हम एक ऐसा समाज बना सकते हैं जो न सिर्फ़ आगे बढ़ा हुआ होगा, बल्कि उसमें मानवीयता भी होगी।यह हम पर निर्भर करता है कि हम कैसा भविष्य चुनते हैं। जैसे-जैसे भारत बदल रहा है, हम सिर्फ़ ढांचा ही नहीं बना रहे हैं, बल्कि हम खुद समाज के भविष्य को भी आकार दे रहे हैं। इसलिए असली चुनौती टेक्नोलॉजी से जुड़ी नहीं है, बल्कि नैतिकता से जुड़ी है। क्या हम टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल लोगों को ताकत देने के लिए करेंगे या उन्हें काबू में रखने के लिए करेंगे? क्या हम सबको साथ लेकर चलने को ज़्यादा अहमियत देंगे या काम करने की तेज़ी को? क्या हम ऐसे सिस्टम बनाएंगे जो सभी के काम आएं, या सिर्फ़ कुछ खास लोगों के? इन सवालों के जवाब ही यह तय करेंगे कि भारत का यह बदलाव न्याय की एक कहानी बनेगा, या अन्याय की। टेक्नोलॉजी हमें ताकत देती है, नैतिकता हमें बताती है कि उस ताकत का इस्तेमाल कैसे करना है, और न्याय यह पक्का करता है कि उस ताकत का फ़ायदा सभी को मिले। अगर हम इन तीनों ताकतों को एक साथ ला पाएं, तो भारत न सिर्फ़ खुद बदलेगा, बल्कि वह पूरी दुनिया को यह भी दिखाएगा कि तरक्की नए आइडिया वाली होने के साथ-साथ न्यायपूर्ण भी कैसे हो सकती है!

–अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

इटली व भारत की साझेदारी उच्च राजनीतिक और संस्थागत स्तर पर लगातार संवाद से आगे बढ़ी

नरेन्द्र मोदी

जॉर्जिया मेलोनी

भारत और इटली के संबंध अब एक निर्णायक दौर में पहुंच चुके हैं। हाल के वर्षों में दोनों देशों के रिश्तों में अभूतपूर्व तेजी से विस्तार हुआ है। यह संबंध केवल सौहार्दपूर्ण मित्रता तक सीमित नहीं रहे, बल्कि अब स्वतंत्रता और लोकतंत्र के मूल्यों तथा भविष्य के साझा दृष्टिकोण पर आधारित एक विशेष रणनीतिक साझेदारी में बदल चुके हैं। ऐसे समय में, जब पूरी दुनिया की व्यवस्था बड़े बदलाव के दौर से गुजर रही है, इटली और भारत की साझेदारी उच्च राजनीतिक और संस्थागत स्तर पर लगातार संवाद से आगे बढ़ रही है। यह संबंध अब एक नए और अधिक व्यापक स्तर पर पहुंच रहा है, जिसमें दोनों देशों की आर्थिक ताकत, सामाजिक रचनात्मकता और हजारों वर्षों पुरानी सभ्यतागत विरासत शामिल है। हमारा सहयोग इस साझा समझ को दर्शाता है कि 21वीं सदी में समृद्धि और सुरक्षा इस बात पर निर्भर करेगी कि देश कितनी क्षमता से नवाचार करें, ऊर्जा परिवर्तन का प्रबंधन करें और अपनी रणनीतिक आत्मनिर्भरता को मजबूत करें। इसी उद्देश्य से हमने अपने द्विपक्षीय संबंधों को और गहरा तथा विविध बनाने का संकल्प लिया है, ताकि नए लक्ष्यों को हासिल किया जा सके और दोनों देशों की पूरक शक्तियों का बेहतर उपयोग हो सके। हम इटली की डिजाइन क्षमता, बेहतरीन विनिर्माण कौशल और विश्वस्तरीय सुपरकंप्यूटर तकनीक-जो उसे एक औद्योगिक महाशक्ति बनाती है-को भारत की तेज़ आर्थिक वृद्धि, इंजीनियरिंग प्रतिभा, बड़े पैमाने की क्षमता, नवाचार और 100 से अधिक यूनिकॉर्न तथा 2 लाख स्टार्ट-अप वाले उद्यमी इकोसिस्टम के साथ जोड़कर एक शक्तिशाली तालमेल बनाना चाहते हैं। यह केवल दो व्यवस्थाओं का साधारण मेल नहीं है, बल्कि ऐसा साझा मूल्य निर्माण है जिसमें दोनों देशों की औद्योगिक ताकतें एक-दूसरे को और अधिक मजबूत बनाती हैं।

यूरोपीय संघ और भारत के बीच मुक्त व्यापार समझौता (एफटीए) दोनों दिशाओं में व्यापार और निवेश बढ़ाने का रास्ता खोलता है। हमारा लक्ष्य 2029 तक भारत और इटली के बीच व्यापार को 20 अरब यूरो से आगे ले जाना है। इसमें रक्षा एवं एयरोस्पेस, स्वच्छ प्रौद्योगिकी, मशीनरी, ऑटोमोबाइल पुर्जे, रसायन, दवाइयां, वस्त्र, कृषि-खाद्य क्षेत्र और पर्यटन समेत कई क्षेत्रों पर विशेष ध्यान रहेगा। मेड इन इटली हमेशा से दुनिया भर में उत्कृष्टता का प्रतीक रहा है, और आज इसका स्वाभाविक तालमेल मेक इन इंडिया पहल के उच्च गुणवत्ता वाले लक्ष्यों के साथ दिखाई देता है। इसी संदर्भ में, भारत के लिए उत्पादन में इतालवी कंपनियों की बढ़ती रुचि और इटली में भारतीय उद्योगों की बढ़ती मौजूदगी - जो अब दोनों पक्षों से मिलाकर 1000 से अधिक हो चुकी है - एक सकारात्मक संकेत है। यह हमारी सप्लाई चेन के एकीकरण को और मजबूत करेगी। तकनीकी नवाचार हमारी साझेदारी का सबसे महत्वपूर्ण आधार है। आने वाले दशकों में दुनिया एक बड़े तकनीकी बदलाव के दौर से गुजरेगी, जिसमें कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) क्वांटम कंप्यूटिंग, उन्नत विनिर्माण, महत्वपूर्ण खनिज और डिजिटल बुनियादी ढांचे जैसे क्षेत्रों में तेज प्रगति होगी। भारत का तेज़ी से बढ़ता नवाचार तंत्र और कुशल पेशेवरों की बड़ी संख्या, तथा इटली की उन्नत औद्योगिक क्षमता-इन क्षेत्रों में दोनों देशों के सहयोग को स्वाभाविक और रणनीतिक बनाती है। दोनों देशों के विश्वविद्यालयों और शोध संस्थानों के बीच बढ़ती साझेदारी भी इसे मजबूती देगी। भारत का डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर (डीपीआई) पहले से ही दुनिया के कई देशों, खासकर ग्लोबल साउथ के देशों, के लिए आकर्षण का केंद्र बन रहा है। विशेष रूप से कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) आज हमारे समाज और वैश्विक अर्थव्यवस्था पर गहरा प्रभाव डाल रही है। इटली और भारत लंबे समय से इस दिशा में सहयोग कर रहे हैं, ताकि एआई का विकास जिम्मेदार और मानव-केंद्रित हो। भारत और इटली एआई को समावेशी विकास का एक शक्तिशाली माध्यम भी मानते हैं, खासकर ग्लोबल साउथ के देशों के लिए। डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर और आसान, बहुभाषी तकनीकों के जरिए एआई सामाजिक और डिजिटल खाइयों को कम कर सकता है, न कि उन्हें और बढ़ा सकता भारत के मानव विज़न- यानी तकनीक के केंद्र में मानव को रखने की सोच और इटली की मानव-केंद्रित एल्गोर-एथिक्सकी अवधारणा, जो उसकी मानवतावादी परंपरा पर आधारित है, पर आगे बढ़ते हुए हमारी साझेदारी का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता सामाजिक सशक्तिकरण का माध्यम बने। हमारा दृष्टिकोण भारत की विशाल डिजिटल क्षमता को इटली की नैतिक और औद्योगिक विशेषज्ञता के साथ जोड़ता है, ताकि तकनीक मानव गरिमा की सेवा कर सके। सुरक्षित डिजिटल सहयोग, क्षमता निर्माण और मजबूत साइबर ढांचे से जुड़ी श्रेष्ठ कार्यप्रणालियों को साझा करके, हम एक ऐसा खुला, भरोसेमंद और समान डिजिटल वातावरण बनाना चाहते हैं, जिसमें हर देश एआई का उपयोग कर सके और उससे लाभ उठा सके। यही सोच इटली की जी-7 अध्यक्षता और 2026 में नई दिल्ली में आयोजित एआई इम्पैक्ट समिट के निष्कर्षों का मुख्य आधार है। एआई को इंसानों की ओर से इंसानों के लिए बनाई गई तकनीक मानने का अर्थ है यह स्पष्ट करना कि तकनीक न तो मनुष्य की जगह ले सकती है और न ही उसके मूल अधिकारों को कमजोर कर सकती है।

इसका उपयोग जनमत को प्रभावित करने या लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में हस्तक्षेप करने के लिए भी नहीं होना चाहिए। आज की तेजी से जुड़ी हुई दुनिया में स्वतंत्रता और मानव गरिमा की रक्षा का हमारा दृष्टिकोण इसी चुनौती पर आधारित है। हमारा सहयोग अंतरिक्ष क्षेत्र तक भी फैला हुआ है। अंतरिक्ष अनुसंधान और सैटेलाइट तकनीक में भारत की उल्लेखनीय प्रगति तथा इटली की एयरोस्पेस इंजीनियरिंग में उत्कृष्टता, संयुक्त परियोजनाओं और नई पीढ़ी की तकनीकों के विकास के लिए बड़े अवसर प्रदान करती है। राष्ट्रों की समृद्धि सुनिश्चित करने के लिए सुरक्षा और स्थिरता बेहद आवश्यक हैं। इसलिए इटली और भारत रक्षा, सुरक्षा और रणनीतिक तकनीकों जैसे क्षेत्रों में अपने सहयोग को और मजबूत करना चाहते हैं। हमारा सहयोग महत्वपूर्ण समुद्री मार्गों की सुरक्षा सुनिश्चित करने, तथा आतंकवाद, अंतरराष्ट्रीय अपराध नेटवर्क, मादक पदार्थों की तस्करी, साइबर अपराध और मानव तस्करी जैसी चुनौतियों के खिलाफ मजबूती बढ़ाने में मदद करेगा। ऊर्जा हमारी साझेदारी का एक और महत्वपूर्ण आधार है। दुनिया में ऊर्जा के विविध स्त्रोतों की ओर बढ़ रहे बदलाव के लिए नवाचार, निवेश और सहयोग की आवश्यकता है। भारत और इटली नवीकरणीय ऊर्जा से लेकर हाइड्रोजन तकनीक, तथा स्मार्ट ग्रिड से लेकर मजबूत बुनियादी ढांचे तक कई क्षेत्रों में साथ काम कर रहे हैं। ग्रीन हाइड्रोजन निर्यात का वैश्विक केंद्र बनने की भारत की पहल अपार संभावनाएं रखती है। यह इटली की नवीकरणीय ऊर्जा अवसंरचना में उन्नत तकनीक और यूरोप के लिए ऊर्जा प्रवेश द्वार के रूप में उसकी रणनीतिक भूमिका के साथ पूरी तरह मेल खाती है। इस संदर्भ में भारत की अगुवाई वाली प्रमुख पहलों- अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (आईएसए), आपदा प्रतिरोधी अवसंरचना के लिए गठबंधन (सीडीआरआई) और ग्लोबल बायोफ्यूल्स एलायंस (जीबीए) में अन्य देशों के साथ हमारा सहयोग भी बेहद महत्वपूर्ण है। भौतिक, डिजिटल और मानवीय संपर्क ही वह कड़ी है जो हमें एक-दूसरे से जोड़ती है। भारत और इटली दोनों वैश्विक अर्थव्यवस्था के दो महत्वपूर्ण क्षेत्रों-इंडो-पैसिफिक और भूमध्यसागर के केंद्र में स्थित हैं। अब इन क्षेत्रों को अलग-अलग नहीं, बल्कि आपस में जुड़े हुए क्षेत्रों के रूप में देखा जा रहा है। दरअसल, हम एक नए इंडो-मैडिटेरेनियन क्षेत्र के उभरने को देख रहे हैं, जो व्यापार, तकनीक, ऊर्जा, डेटा और विचारों का एक महत्वपूर्ण गलियारा बन रहा है और हिंद महासागर को यूरोप से जोड़ता है। इसी आपस में जुड़े हुए क्षेत्र में हमारा संबंध स्वाभाविक रूप से एक विशेष रणनीतिक साझेदारी के रूप में विकसित होता है- ऐसी साझेदारी, जो दो महाद्वीपों को जोड़ती है और नई वैश्विक परिस्थितियों को आकार देती है। इस संदर्भ में भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारा (आईएमईसी) एक ऐसी दूरदर्शी योजना है, जिसका उद्देश्य आधुनिक परिवहन और बुनियादी ढांचे, डिजिटल नेटवर्क, ऊर्जा प्रणालियों और मजबूत सप्लाई चेन के माध्यम से हमारे क्षेत्रों को जोड़ना है। भारत और इटली अन्य साझेदार देशों के साथ मिलकर इस दृष्टि को वास्तविकता में बदलने के लिए भी प्रतिबद्ध हैं। हम अपने साझा चुनौतियों का समाधान दोनों देशों के गहरे संबंधों और लंबे सांस्कृतिक जुड़ाव के आधार पर कर सकते हैं। भारतीय संस्कृति में 'धर्म' का विचार उस जिम्मेदारी की भावना को दर्शाता है, जो हमारे कार्यों का मार्गदर्शन करना चाहिए। वहीं "वसुधैव कुटुंबकम्"-अर्थात पूरी दुनिया एक परिवार है का सिद्धांत आज के आपस में जुड़े डिजिटल युग में और भी अधिक प्रासंगिक लगता है। ये मूल्य इटली की मानवतावादी परंपरा से भी मेल खाते हैं, जिसकी जड़ें पुनर्जागरण काल में हैं। यह परंपरा हर व्यक्ति की गरिमा और संस्कृति की उस शक्ति पर जोर देती है, जो समाजों और लोगों को एकजुट कर सकती है। इसलिए हमारी साझा दृष्टि का उद्देश्य लोगों को केंद्र में रखते हुए भारत-इटली साझेदारी को मजबूत, आधुनिक और भविष्य उन्मुख आधार प्रदान करना है।

-नरेंद्र मोदी,
भारत के प्रधानमंत्री
-जॉर्जिया मेलोनी
इटली गणराज्य मंत्रिपरिषद की अध्यक्ष

शोषण और पोषण का प्राकृतिक संतुलन

डॉ. कैलाश चन्द सैनी

सृष्टि का संतुलन केवल विशाल पर्वतों और असीमित आकाश में नहीं, बल्कि हमारे पैरों के नीचे रेंगने वाले सूक्ष्म कीटों और शाकाहारी पक्षियों के 'शिकारी' में छिपा है।

यह लेख प्रकृति के उस गुप्त व्याकरण को उद्घाटित करता है, जहाँ शोषण और पोषण की खाद्य श्रृंखला पर्यावरण के महाचक्र को गति प्रदान करती है। पक्षियों के वात्सल्य और कीटों के संघर्ष के माध्यम से हमें पारिस्थितिकी तंत्र की निरंतरता और मानवीय दायित्व का बोध देखने को मिलता है।

जब हमारी दृष्टि आकाश की विराटता से उतरकर धरती की सूक्ष्म परतों पर ठहरती है, तब यह एहसास होता है कि जीवन का असली संतुलन उसी अदृश्य संसार में रचा-बसा है, जहाँ हर क्षण शोषण और पोषण का चक्र साथ-साथ चलता है। यहाँ न कोई ठहराव है, न विराम - बल्कि एक सतत प्रक्रिया है, जिसमें हर जीव दूसरे के अस्तित्व से जुड़कर प्रकृति के संतुलन को बनाए रखता है।

इसी अदृश्य जगत में कीटों का संघर्ष और पक्षियों का संकल्प एक-दूसरे से गुँथा हुआ है। एक ओर सूक्ष्म कीट हैं, जो मिट्टी, पत्तों और हवा के बीच जीवन की ऊर्जा को संचित और संचारित करते हैं; दूसरी ओर हुदहुद, पतरिंगा, बया और धनेश जैसे पक्षी हैं, जो इस ऊर्जा को अपनी अगली पीढ़ी तक पहुँचाने का दायित्व निभाते हैं। यही वह बिंदु है जहाँ प्रकृति का संतुलन अपने सबसे सूक्ष्म, किंतु सबसे प्रभावशाली रूप में दिखाई देता है।

अस्तित्व की निरंतरता: कीटों का अदृश्य संघर्ष

प्रकृति के इस गुप्त व्याकरण में कीट सबसे आधारभूत इकाई के रूप में उपस्थित हैं। वे केवल छोटे जीव नहीं, बल्कि जीवन-चक्र के मौन संवाहक हैं। मिट्टी में पड़ी सूखी पत्तियों को विघटित करना, जैविक पदार्थों को पुन: उपयोगी बनाना और पारिस्थितिकी तंत्र में ऊर्जा का प्रवाह बनाए रखना- ये सभी कार्य कीटों के अदृश्य श्रम का परिणाम हैं। इल्लियाँ, भृंग, दीमक और असंख्य अन्य कीट निरंतर इस प्रक्रिया में संलग्न रहते हैं। उनका संघर्ष केवल अपने अस्तित्व के लिए नहीं, बल्कि पूरे पारिस्थितिक संतुलन के लिए होता है।

वात्सल्य का विज्ञान: पक्षियों का संकल्प

कीटों के इस संघर्ष का सबसे सशक्त प्रतिफल पक्षियों के जीवन में दिखाई देता है।

पक्षी जगत में मातृत्व और पितृत्व केवल भावनात्मक अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि एक वैज्ञानिक अनिवार्यता है। बया हो या हुदहुद - अधिकांश पक्षी अपने शिशुओं के पालन-पोषण के दौरान कीटों पर निर्भर हो जाते हैं। इसका कारण स्पष्ट है - शिशु पक्षियों के तीव्र शारीरिक विकास के लिए प्रोटीन-समृद्ध आहार आवश्यक होता है, और यह आवश्यकता कीटों के माध्यम से ही पूरी होती है। हर बार जब कोई पक्षी अपनी चोंच में एक छोटा-सा कीट या लारवा लेकर अपने घोंसले की ओर लौटता है, तो वह केवल भोजन नहीं, बल्कि अपने शिशुओं के भविष्य की उड़ान का आधार लेकर आता है।

कुशलता और रणनीति: चोंच के अद्भुत उपकरण

पक्षियों की चोंच केवल एक अंग नहीं, बल्कि एक परिष्कृत उपकरण है। हरा पतरिंगा अपने शिकार की तीव्रता के लिए प्रसिद्ध है। यह उड़ते हुए कीटों को झपटकर पकड़ता है और उन्हें सुरक्षित रूप से खाने के लिए पहले उनके विषैले डंक को निष्क्रिय कर देता है। वहीं हुदहुद अपनी लंबी और संवेदनशील चोंच के माध्यम से मिट्टी के भीतर छिपे कीटों को खोज

निकालता है। इसी क्रम में धनेश और बया भी अपनी विशिष्ट चोंच के माध्यम से इन कीटों का उपयोग प्राय: अपने शिशुओं के पोषण के लिए करते हैं। यह विविधता बताती है कि प्रकृति ने हर प्रजाति को एक विशिष्ट भूमिका और कौशल प्रदान किया है।

पर्यावरणीय संतुलन: एक सशक्त तंत्र

कीट और पक्षियों के बीच यह संबंध पर्यावरणीय संतुलन का भी प्रमुख आधार है।

कीट जहाँ जैविक पदार्थों के पुनर्चक्रण में सहायक हैं, वहीं पक्षी उनकी आबादी को नियंत्रित कर पारिस्थितिकी तंत्र को स्थिर बनाए रखते हैं। विशेष रूप से राजस्थान जैसे अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में, जहाँ संसाधनों की सीमाएँ स्पष्ट हैं, यह संतुलन अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है। यहाँ का हर जीव अपने अस्तित्व के साथ-साथ पूरे पारिस्थितिक तंत्र की स्थिरता में योगदान देता है। किन्तु आधुनिक कृषि में कीटनाशकों का अनियंत्रित उपयोग इस संतुलन को गंभीर रूप से प्रभावित कर रहा है। कीटों की संख्या में कमी का सीधा प्रभाव पक्षियों पर पड़ता है, और अंतत: यह पूरी खाद्य-श्रृंखला को असंतुलित कर देता है। यह एक स्पष्ट चेतावनी है कि प्रकृति के इस सूक्ष्म तंत्र के साथ छेड़छाड़ दूरगामी परिणाम ला सकती है।

सूक्ष्म में समाहित विराट

प्रकृति का सबसे गहन सत्य यही है कि यहाँ कोई भी जीवन अनावश्यक नहीं है।

कीटों का संघर्ष और पक्षियों का संकल्प- दोनों मिलकर उस अदृश्य ताने-बाने को रचते हैं, जिस पर जीवन का संपूर्ण ढाँचा टिका हुआ है। जब हम इस प्रकृति के गुप्त व्याकरण को समझने का प्रयास करते हैं, तब यह स्पष्ट हो जाता है कि विराटता का वास्तविक आधार सूक्ष्मता में ही निहित है। यह समझ हमें न केवल वैज्ञानिक रूप से जागरूक बनाती है, बल्कि एक संवेदनशील दृष्टि भी प्रदान करती है - जिससे हम प्रकृति को केवल संसाधन नहीं, बल्कि एक जीवंत, संतुलित और अर्थपूर्ण व्यवस्था के रूप में देख सकें। यही वह बोध है, जो हमें इस धरती का अधिक जिम्मेदार नागरिक बनने की प्रेरणा देता है।

–डॉ. कैलाश चन्द सैनी,
वरिष्ठ लेखक एवं पूर्व मुख्य शोध एवं संदर्भ अधिकारी राजस्थान विधानसभा

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

बुधवार 20 मई, 2026

प्रथम ज्येष्ठ मास (अधिक), कृष्ण पक्ष, चतुर्थी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2083, आर्द्रा नक्षत्र प्रात: 6:12 तक, शूल योग दिन 2:10 तक, विष्टि करण दिन 11:07 तक, चन्द्रमा रात्रि 10:39 से कर्क राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-वृष, चन्द्रमा-मिथुन, मंगल-मेष, बुध-वृष, गुरू-मिथुन, शुक्र-मिथुन, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह

आज कुमार योग प्रात: 6:12 तक है। कुमार योग दिन 11:07 से रात्रि 4:12 तक है। भद्रा दिन 11:07 तक रहेगी।

श्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:02 तक, शुभ 10:43 से 12:23 तक, चर 3:44 से 5:25 तक, लाभ 5:25 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 5:41, सूर्यास्त 7:06

मेष
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाना पड़ सकता है।

वृष
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन हो सकता है।

मिथुन
मानसिक तनाव से राहत मिल सकती है। महत्वपूर्ण कार्य सफलता से मनोबल ऊंचा रहेगा। आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क
आज अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। व्यक्तिगत परेशानियां अभी बनी रहेगी।

सिंह
आर्थिक/वित्तीय मामलों में संतुलन बना रहेगा। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

कन्या
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। अटके हुए कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी।

तुला
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति आज ठीक रहेगी। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

वृश्चिक
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। नवीन कार्यों में परेशानी हो सकती है।

धनु
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मकर
विवादित कानूनी मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

कुंभ
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आज महत्वपूर्ण और आवश्यक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

मीन
घर-परिवार में अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।